International Journal ofAdvanced ResearchAnd Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 728-732

संस्कृत शिक्षक तथा हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० कमला पति तिवारी
असिस्टेंट प्रोफेसर, ग्लोबल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
किसी राष्ट्र की उन्नति में भाषा का विशिष्ट योगदान होता है भाषा ही वह सर्वश्रेष्ठ माध्यम है जिसके द्वारा कोई मुनष्य किसी दूसरे मनुष्य के साथ अपने विचार भावना सम्बन्ध आदि का आदान प्रदान करता है अतः व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र के लिए भाषा का विशेष महत्व होता है। जिसमें सर्वाधिक दायित्व सम्बन्धित भाषा के शिक्षक के ऊपर होता है। कोई शिक्षक जब तक अपने कार्य से सन्तुष्ट नहीं होता तब तक वह उसे उतना महत्व नहीं देता जितना महत्व उस कार्य को देना आवश्यक है। प्रस्तुत शोध कार्य में उत्तर प्रदेश के लखनऊ मण्डल में संचालित स्नातक महाविद्यालय के संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की उनके भाषा के प्रति विचार और दृष्टिकोण का अध्यनन वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया है। एवं उससे सम्बन्धित व्यवसायरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि के विषय में भी अध्ययन किया गया है।

मूल शब्दः शिक्षक, अभिवृत्ति, कार्य सन्तुष्टि।

प्रस्तावना
किसी राष्ट्र की उन्नति में भाषा का विशिष्ट योगदान होता है भाषा ही वह सर्वश्रेष्ठ माध्यम है जिसके द्वारा कोई मुनष्य किसी दूसरे मनुष्य के साथ अपने विचार भावना सम्बन्ध आदि का आदान प्रदान करता है अतः व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र के लिए भाषा का विशेष महत्व होता है।

किसी भी भाषा की उन्नति विद्यालय, महाविद्यालय और शिक्षण संस्थानों में अधिक होता है। जिसमें सर्वाधिक दायित्व सम्बन्धित भाषा शिक्षक के ऊपर होता है। शिक्षक का उस भाषा के प्रति कैसा दृष्टिकोण है वह अपने शिक्षण से सम्बन्धित भाषा को कितना महत्व देता है, यह उस भाषा शिक्षक के ऊपर निर्भर होता है। कोई शिक्षक जब तक अपने कार्य से सन्तुष्ट नहीं होता तब तक वह उसे उतना महत्व नहीं देता जितना महत्व उस कार्य को देना आवश्यक है।

प्रस्तुत शोध कार्य में संस्कृत भाषा तथा हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की उनके भाषा के प्रति विचार और दृष्टिकोण का अध्यनन किया गया है एवं उससे सम्बन्धित व्यवसायरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि के विषय में भी अध्ययन किया गया है। साथ ही शोधकर्ता ने यह भी पुष्ट किया है कि अपने शिक्षण से सम्बद्ध भाषा को शिक्षक कितना महत्व प्रदान करते हैं उस भाषा के प्रति उनका दृष्टिकोण कैसा है अपने व्यवसाय से कितने सन्तुष्ट हैं तथा अपने व्यवसाय से सम्बद्ध भाषा के प्रति उनका दृष्टि सकारात्मक है या नहीं।

यदि सम्बद्ध भाषा के प्रति उनका दृष्टिकोण सकारात्मक नहीं है तथा अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट नहीं हैं तब वहाँ एक नई समस्या उत्पन्न होती है तथा भाषा शिक्षण भार समान हो जाती है। अतः उस समस्या से सम्बन्धित कारणों की खोज तथा संभावित निराकरण प्रस्तुत शोध में किया गया है।

अध्ययन के उददेश्य
a. संस्कृत शिक्षक एवं हिन्दी भाषा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
b. संस्कृत भाषा एवं अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
c. संस्कृत शिक्षक एवं हिन्दी भाषा शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन करना।
d. संस्कृत भाषा एवं अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन करना।
e. संस्कृत शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि में सम्बन्ध का अध्ययन करना।
f. हिन्दी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि में सम्बन्ध का अध्ययन करना।
g. अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

अध्ययन समस्या का सीमांकन
प्रस्तुत शोध उत्तर प्रदेश के लखनऊ मण्डल में सचालित स्नातक महाविद्यालय के संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा शिक्षकों के केवल दो चर अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन
वेगम (1994) महोदया ने केरल विश्वविद्यालय के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष रूप में पाया कि सामाजिक, सांस्कृतिक चर महाविद्यालय शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि से निश्चित रूप में जुडें थे। जैसे– संकाय, धैर्य, स्थानीय जाति समुदाय की उत्पत्ति शिक्षकवाहन विधि के रूप में और महाविद्यालय शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में निश्चित रूप में व्यक्तित्व आचरण जुड़ा हुआ था। जैसे– आत्मसम्माान, राष्ट्रवाद, आध्यात्मकवाद पर आधारित विचार आदि।

पाण्डा (2001) महोदय ने असम उड़ीसा महाविद्यालय शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति पर अध्ययन किया और निश्कर्ष रूप में पाया कि असम उड़ीसा के ज्यादातर महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक अपने शिक्षक व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति सकरात्मक थीं। महाविद्यालय के ज्यादातर शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि सामान्य थी। लिंग, अनुभव, स्थान, स्थिति के सन्दर्भ में शिक्षण व्यवसाय के प्रति अधिक अन्तर

नहीं था तथा महाविद्यालय के सामान्य शिक्षकों में भी और विभिन्न श्रेणियों में अनुभवी शिक्षकों में अधिक अन्तर नहीं था। अध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति और व्यक्तित्व में सार्थक और सकरात्मक सम्बन्ध था।

एट अल कौर (2008) महोदया ने पंजाब प्रदेश के महाविद्यालय में अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन किया और निष्कर्ष रूप में पाया कि सरकारी महाविद्यालय शिक्षक अधिक सन्तुष्ट थे और भी स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षक सरकारी शिक्षकों की अपेक्षा ज्यादा कुंठाग्रस्त थे।

श्री देवी (2011) ने मैसूर विश्वविद्यालय के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष रूप में पाया कि भेद की दृष्टि से और लम्बे समय से कार्यरत शिक्षक शिक्षिकाओं के कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं था। सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की अपेक्षा सरकारी संस्थानों में कार्यरत शिक्षक अपने व्यवसाय से अधिक सन्तुष्ट थे।

शोध परिकल्पना

प्रस्तुत शोधकार्य में निम्नलिखित शून्य परिकल्पना निर्मित है –

H_{01}: संस्कृत शिक्षक एवं हिन्दी भाषा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{02}: संस्कृत शिक्षक एवं अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{03}: संस्कृत शिक्षक एवं हिन्दी भाषा शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{04}: संस्कृत शिक्षक एवं अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{05}: संस्कृत शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{06}: हिन्दी भाषा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।

H_{07}: अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोधकार्य संस्कृत, हिन्दी, तथा अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि से सम्बन्धित है अतः आवश्यकतानुसार वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया। वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का सम्बन्ध वर्तमान से होता है। अतः वर्तमान में विद्यमान तत्व – परिस्थिति, व्यक्ति, वस्तु, घटना इत्यादि के विषय में आंकडों के संकलन तथा उसका विवेचन, विश्लेषण, वर्गीकरण, मापक आदि कार्य होते हैं।

समष्टि तथा न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में उत्तर प्रदेश के लखनऊ मण्डल में संचालित स्नातक महाविद्यालयों को समग्र के रूप में चयनित किया गया है। लखनऊ मण्डल में संचालित स्नातक महाविद्यालयों में असम्भवता (Non Probability) पर आधारित सुविधा प्रतिदर्श चयन विधि के माध्यम से वर्तमान समय में शिक्षण कार्यरत 100 शिक्षकों को (50 पुरूष 50 महिला) प्रतिदर्श के रूप में चुना गया।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा डा0 एस0 पी0 अहलूवालिया द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत शिक्षक अभिवृत्ति मापनी तथा डा0 अमर सिंह एवं टी0 आर0 शर्मा द्वारा निर्मित कार्य सन्तुष्टि मापने के लिए किया गया है। प्रयुक्त सांख्यिकीय वर्तमान शोध के निर्धारित उददेश्यों एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, सहसम्बन्ध एवं टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

H_{01}: संस्कृत भाशा शिक्षक एवं हिन्दी भाशा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए न्यादर्श के दो समूहों को चुना गया। प्रथम समूह संस्कृत भाषा शिक्षक तथा दूसरा समूह हिन्दी भाषा शिक्षकों का चुना गया। प्रथम न्यादर्श समूह संख्या–100, मध्यमान–272.09 और मानकविचलन–15.32 है। इसी प्रकार द्वितीय न्यादर्श समूह संख्या–100, मध्यमान– 240.29 और मानकविचलन–15.101 है। दोनों मध्यमानों के बीच 31.80 अन्तर है, तथा दोनों मध्यमानों के बीच अन्तर की मानक त्रुटि 2.15 है। और टी–परीक्षण से 14.783 मूल्य प्राप्त हुआ। जिसका विवरण तालिका के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है –

तालिका 1

क्रं. सं.	विषय	अध्यापक संख्या (N)	मध्यमान (M)	मनक विचलन (S.D.)	t - मूल्य	मध्यमान अन्तर	मनक त्रुटि	सार्थकता परिणाम
1	संस्कृत	100	272.09	15.320	14.783	31.80	2.15	सार्थक है।
2	हिन्दी	100	240.29	15.101				

df = 198

तालिका में प्रदर्शित है कि टी–परीक्षण से प्राप्त मान 14.783 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर के निश्चित मान 1.96 एवं 0.05 सार्थकता स्तर के निश्चित मान 2.58 से अधिक है, इस कारण से सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है। अतः इससे सम्बद्ध शून्य परिकल्पना अस्वीकृत है। इस अध्ययन से कहा जा सकता है कि संस्कृत भाषा शिक्षक तथा हिन्दी भाषा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। अर्थात् प्रेक्षित अन्तर संयोगवश नहीं है।

H_{02}: संस्कृत भाषा शिक्षक एवं अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए न्यादर्श के दो समूहों को चुना गया। प्रथम समूह संस्कृत भाषा शिक्षक तथा दूसरा समूह अंग्रेजी भाषा शिक्षकों का चुना गया। अंग्रेजी न्यादर्श समूह संख्या–100, मध्यमान– 289.45 और मानकविचलन–29.955 है। इसी प्रकार संस्कृत न्यादर्श समूह संख्या–100, मध्यमान–272.09 और मानकविचलन–15.32 है। दोनों मध्यमानो के बीच 17.360 अन्तर है, तथा दोनों मध्यमानों के बीच अन्तर की मानकत्रुटि 3.364 है। और टी–परीक्षण से 5.160 मूल्य प्राप्त हुआ। जिसका विवरण तालिका के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है –

तालिका 2: संस्कृत भाषा शिक्षक एवं अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन

क्रं.सं.	विषय	अध्यापक संख्या (N)	मध्यमान (M)	मनक विचलन (S.D.)	t– मूल्यम्	मध्यमान अन्तर	मनक त्रुटि	सार्थकता परिणाम
1	अंग्रेजी	100	289.45	29.955	5.360	17.360	3.364	सार्थक है।
2	संस्कृत	100	272.09	15.320				

df=198

तालिका में प्रदर्शित है कि टी–परीक्षण से प्राप्त मूल्य 5.360 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर के निश्चित मान 1.96 एवं 0.05 सार्थकता स्तर के निश्चित मान 2.58 से अधिक है, इस कारण से सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है। अतः इससे सम्बद्ध शून्य परिकल्पना अस्वीकृत है। इस अध्ययन से कहा जा सकता है कि संस्कृत भाषा शिक्षक तथा अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। अर्थात् प्रेक्षित अन्तर संयोगवश नहीं है।

H_{03}: संस्कृत शिक्षक एवं हिन्दी भाशा शिक्षकों की कार्य सन्तुश्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए न्यादर्श के दो समूहों को चुना गया। प्रथम समूह संस्कृत भाषा शिक्षक तथा दूसरा समूह हिन्दी भाषा शिक्षकों का चुना गया। प्रथम न्यादर्श समूह संख्या–100, मध्यमान– 77.85 और मानकविचलन–9.115 है। इसी प्रकार द्वितीय न्यादर्श समूह संख्या–100, मध्यमान–66.64 और मानकविचलन–6. 764 है। दोनों मध्यमानों के बीच 15.98 अन्तर है, तथा दोनों मध्यमानों के बीच अन्तर की मानक त्रुटि 1.135 है। और टी–परीक्षण से 9.877 मूल्य प्राप्त हुआ। जिसका विवरण तालिका के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है –

तालिका 3

क्रं. सं.	विषय	अध्यापक संख्या (N)	मध्यमान (M)	मनक विचलन (S.D.)	t–मूल्य	मध्यमान अन्तर	मनक त्रुटि	सार्थकता परिणाम
1	संस्कृत	100	77.85	9.115	9.877	15.98	1.135	सार्थकता है।
2	हिन्दी	100	66.64	6.764				

df=198

तालिका में प्रदर्शित है कि टी–परीक्षण से प्राप्त मूल्य 9.877 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर के निश्चित मान 1.96 एवं 0.05 सार्थकता स्तर के निश्चित मान 2.58 से अधिक है, इस कारण से सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है। अतः इससे सम्बद्ध शून्य परिकल्पना अस्वीकृत है। इस अध्ययन से कहा जा सकता है कि संस्कृत भाषा शिक्षक तथा हिन्दी भाषा शिक्षकों की शिक्षण सन्तुश्टि में सार्थक अन्तर है। अर्थात् प्रेक्षित अन्तर संयोगवश नहीं है।

H_{04}: संस्कृत भाषा शिक्षक एवं अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए न्यादर्श के दो समूहों को चुना गया। प्रथम समूह संस्कृत भाषा शिक्षक तथा दूसरा समूह अंग्रेजी भाषा शिक्षकों का चुना गया। प्रथम न्यादर्श समूह संख्या–100, मध्यमान–77.85 और मानकविचलन–9.115 है। इसी प्रकार द्वितीय न्यादर्श समूह संख्या–100, मध्यमान–69.85 और मानकविचलन–4. 617 है। दोनों मध्यमानों के बीच 0.000 अन्तर है, तथा दोनों मध्यमानों के बीच अन्तर की मानकत्रुटि 1.022 है। और टी–परीक्षण से 7.830 मूल्य प्राप्त हुआ। जिसका विवरण तालिका के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है –

तालिका 4 संस्कृत भाषा शिक्षक एवं अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन

क्रं.सं.	विषय	अध्यापक संख्या (N)	मध्यमान (M)	मनक विचलन (S.D.)	t– मूल्यम्	मध्यमान अन्तर	मनक त्रुटि	सार्थकता परिणाम
1	संस्कृत	100	77.85	9.115	7.830	0.000	1.022	सार्थकता है।
2	अंग्रेजी	100	69.85	4.617				

df=198

तालिका में प्रदर्शित है कि टी–परीक्षण से प्राप्त मूल्य 7.830 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर के निश्चित मान 1.96 एवं 0.05 सार्थकता स्तर के निश्चित मान 2.58 से अधिक है, इस कारण से सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है। अतः इससे सम्बद्ध शून्य परिकल्पना अस्वीकृत है। इस अध्ययन से कहा जा सकता है कि संस्कृत भाषा शिक्षक तथा अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की शिक्षण सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर है। अर्थात् प्रेक्षित अन्तर संयोगवश नहीं है।

H_{05}: संस्कृत शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि में महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं है।

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए न्यादर्श के दो समूहों को चुना गया। प्रथम समूह संस्कृत भाषा शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा दूसरा समूह संस्कृत भाषा शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि चुना गया। दोनों चरों के समूह की न्यादर्श संख्या–100 है। अतः सहसम्बन्ध–गुणांक –. 010 मूल्य प्राप्त हुआ। जिसका विवरण तालिका के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है –

तालिका 5: संस्कृत शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुश्टि में सहसम्बन्ध का अध्ययन

क्रं.सं.	चर	अध्यापक संख्या (N)	सहसम्बन्ध–गुणांक (Coefficient of correlation)	सार्थकता स्तर	
1	शिक्षण अभिवृत्ति	100	–.010	0.05	0.01
2	कार्य सन्तुष्टि	100		.195	.254

df= 98

तालिका में प्रदर्शित है कि सहसम्बन्ध–गुणांक द्वारा प्राप्त मूल्य –. 010 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर के निश्चित मान .254 एवं 0.

05 सार्थकता स्तर के निश्चित मान .195 से कम है, इस कारण से सार्थक अन्तर नहीं प्राप्त हुआ है। अतः इससे सम्बद्ध शून्य परिकल्पना स्वीकृत है। इस अध्ययन से कहा जा सकता है कि संस्कृत शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि में महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं है। अर्थात् प्रेक्षित अन्तर संयोगवश है।

H_{06}: हिन्दी भाशा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुश्टि में महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं है।

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए न्यादर्श के दो समूहों को चुना गया। प्रथम समूह हिन्दी भाषा शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा दूसरा समूह हिन्दी भाषा शिक्षकों की कार्य सन्तुश्टि चुना गया। दोनों चरों के समूह की न्यादर्श संख्या–100 है। अतः सहसम्बन्ध–गुणांक .322 मूल्य प्राप्त हुआ। जिसका विवरण तालिका के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है –

तालिका 6

क्रं. सं.	चर	अध्यापक संख्या (N)	सहसम्बन्ध–गुणांक (Coefficient of correlation)	सार्थकता स्तर	
1	शिक्षण अभिवृत्ति	100	.546	0.05	0.01
2	कार्य सन्तुष्टि	100		.195	.254

df = 98

तलिका में प्रदर्शित है कि सहसम्बन्ध–गुणांक द्वारा प्राप्त मूल्य .546 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर के निश्चित मान .254 एवं 0.05 सार्थकता स्तर के निश्चित मान .195 से अधिक है, इस कारण से सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है। अतः इससे सम्बद्ध शून्य परिकल्पना अस्वीकृत है। इस अध्ययन से कहा जा सकता है कि हिन्दी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुश्टि में महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध है। अर्थात् प्रेक्षित अन्तर संयोगवश नहीं है।

H_{07}: अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि में महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं है।

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए न्यादर्श के दो समूहों को चुना गया। प्रथम समूह अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा दूसरा समूह अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि चुना गया। दोनों चरों के समूह की न्यादर्श संख्या–100 है। अतः सहसम्बन्ध–गुणांक .322 मूल्य प्राप्त हुआ। जिसका विवरण तालिका के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है –

तालिका 7: अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि में सहसम्बन्ध का अध्ययन

क्रं.सं.	चर	अध्यापक संख्या (N)	सहसम्बन्ध–गुणांक (Coefficient of correlation)	सार्थकतास्तर	
1	शिक्षण अभिवृत्ति	100	.322	0.05	0.01
2	कार्य सन्तुष्टि	100		.195	.254

df= 98

तालिका में प्रदर्शित है कि सहसम्बन्ध–गुणांक द्वारा प्राप्त मूल्य .322 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर के निश्चित मान .254 एवं 0.05 सार्थकता स्तर के निश्चित मान .195 से अधिक है, इस कारण से सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है। अतः इससे सम्बद्ध शून्य परिकल्पना अस्वीकृत है। इस अध्ययन से कहा जा सकता है कि अंग्रेजी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि में महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध है। अर्थात् प्रेक्षित अन्तर संयोगवश नहीं है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध की प्रकृति और उददेश्य को ध्यान में रखकर परिकल्पना निर्मित की गई है। परिकल्पनाओं को सह सम्बन्ध अथवा टी परीक्षण के द्वारा परीक्षण किया गया। निष्कर्ष प्राप्त हुए–

संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि में अन्तर पाया गया। संस्कृत भाषा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि में महत्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं है जबकि हिन्दी, अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि में महत्वपूर्ण सम्बन्ध है।

शैक्षिक निहितार्थ

किसी भी भाषा की उन्नति विद्यालय, महाविद्यालय और शिक्षण संस्थानों में अधिक होता है। जिसमें सर्वाधिक दायित्व सम्बन्धित भाषा शिक्षक के ऊपर होता है। शिक्षक का उस भाषा के प्रति कैसा दृष्टिकोण है वह अपने शिक्षण से सम्बन्धित भाषा को कितना महत्व देता है। यह उस भाषा शिक्षक के ऊपर निर्भर होता है।

प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त तथ्यों के अनुसार संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि में अन्तर पाया गया। संस्कृत भाषा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि में महत्वपूर्ण सम्बन्ध नहीं है जबकि हिन्दी, अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि में महत्वपूर्ण सम्बन्ध है।

शोधकर्ता कहना चाहता है कि संस्कृत, हिन्दी अंग्रेजी भाषा शिक्षकों की अपने भाषा के प्रति विभिन्न पक्ष जैसे विद्यालयीय वातावरण, छात्रव्यवहार, शिक्षणविधि, वैयक्तिक विभिन्नता, विचार अभिव्यक्त करने की स्वन्त्रता, सामाजिक प्रतिष्ठा, व्यवसाय के रूप में भाषा चयन, राष्ट्र के नैतिक मानक के निर्धारण में भाषा का महत्व, अध्यापन व्यवसाय में भविष्य, आर्थिकलाभ, पद–दायित्व, कार्यभार, पदोन्नति, वेतनवृद्धि, चिकित्सा आवासीय सुविधा, व्यवसाय में अवकाश का सदुपयोग, पारिवारिक दायित्व, पारस्पारिक, सूचनाओं का आदान–प्रदान एवं नियुक्ति स्थान आदि में प्राप्त अन्तर यह बताता है कि शिक्षक निश्चय ही कहीं न कहीं असन्तुष्ट हैं। महाविद्यालयों को संचालित करने वाले प्रसाशानिकों के लिए यह आवश्यक है कि उनकी पूर्ति करने के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक हो यही शोध का निहितार्थ है।

परामर्श

शिक्षकों के लिए– शिक्षक सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था के संचालक होते हैं। छात्र समाज एवं राष्ट्र के लिए आदर्श होते हैं। इसलिए भाषा के लिए उनकी अभिवृत्ति सकारात्मक हो अपने व्यवसाय के प्रति सन्तुष्टि आवश्यक है तभी शिक्षक शत प्रतिशत अपना योगदान दे सकते हैं, अतः शिक्षक विशेष प्रयत्न करें कि–

क. विद्यालय वातावरण पढने के अनुकूल हो।
ख. छात्रों के व्यवहार के ऊपर ध्यान दें।
ग. भाषा का शुद्ध प्रयाग करें।
घ. शिक्षण विधि समय के अनुसार परिवर्तित कर शिक्षण को रूचिकर बनायें।
ङ. शिक्षक छात्रों के व्यक्तित्व निर्माण के प्रति, चरित्र निर्माण के प्रति, अनुशासन के प्रति सदा तत्पर हों।

प्रसाशन के लिए– शिक्षा प्रशासनिक जो विद्वान होते हैं उनका महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व होता है कि सुव्यवस्थित को सब प्रकार से सुविधा प्रदान कर संतुष्ट करें इसके लिए उन्हे विशेष प्रयत्न करना चाहिए कि–

क. शिक्षण दायित्व वितरण समान हो।
ख. कार्यभार के अनुसार वेतन में वृद्धि हो।
ग. व्यवसायिक संस्थान में आधारभूत सुविधा हो।
घ. पारस्परिक सूचनाओं का आदान प्रदान ठीक हो।

शैक्षिक प्रबन्ध के लिए परामर्श –

क. समय समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन करते रहना चाहिए।
ख. शिक्षकों के लिए विभिन्न अवसरों पर स्वयं ही निर्णय लेने का अवसर प्रदान करना चाहिए।
ग. शिक्षकों के प्रति सहयाग की भावना होनी चाहिए।
घ. विचार प्रकट करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए।

भावी शोध हेतु सम्भावना

इस शोध के समय शोधकर्ता ने अनुभव किया कि अन्य भी कई क्षेत्र हैं जिसमें स्वतन्त्र रूप से शोध कार्य किया जा सकता है उन सम्भावित क्षेत्रों को यहाँ प्रस्तुत किय जा रहा है–

क. विभिन्न मण्डलों में अध्यापनरत महाविद्यालय शिक्षकों की अभिवृत्ति कार्य सन्तुष्टि का कार्य जा सकता है।
ख. शिक्षण अभिवृत्ति कार्य सन्तुष्टि का कार्य किया जा सकता है।
ग. माध्यमिक उच्च माध्यमिक स्तर पर भी शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति कार्य संतुष्टि का भी अध्ययन किया जा सकता विभिन्न प्रान्तीय अन्तर्राष्ट्रीय भाषा शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया जा सकता है।
घ. भाषा शिक्षक के अलावा अन्य विषय अध्यापकों का विषय के प्रति शिक्षण अभिवृत्ति कार्य सन्तुष्टि का अध्यनन किया जा सकता है।
ङ. शिक्षकों के केवल एक चर का विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है।
च. पाये गये अंतर का कारण जानने हेतु प्रत्येक विषय अध्यापकों का स्वतन्त्र अध्ययन आवश्यक है।
छ. विभिन्न भाषा शिक्षकों में भाषा के प्रति भेद है अथवा नहीं इसके लिए शोध आवश्यक है।
ज. भाषा शिक्षकों के भाषा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति बढ़ाने का उपाय खोजने के लिए शोध आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कौल, लोकेश (2009). शैक्षिक अनुसन्धन की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि., नई दिल्ली
2. गैरट ई. हेनरी (2004) शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी पब्लिशर्स नई दिल्ली
3. गुप्ता, एस .पी. एवं अल्का (2005). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद
4. गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता, अलका (2010). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
5. पाण्डेय डॉ. के.पी (2007) शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन
6. राय, पारसनाथ (2005). अनुसन्धन परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा
7. सिंह, अरुण कुमार (2009). मनोविज्ञान, समाजशास्त्रा तथा शिक्षा में शोधविध्यिाँ, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
8. सिंह, द्वारिका प्रसाद एवं भार्गव, महेश (2000). मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी के मूल तत्त्व, एच. पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा,
9. Beegam. L. AnAnalytical study of factors related to job satisfactionAmong college teachers. Indian EducationalAbstract. 1994; 97(3):47-460.
10. Kaur, *et al.* Comparative Study of GovernmentAnd Non Government College Teachers in Relation to Job SatisfactionAnd Job Stress. Online Submission, 2008.
11. Panda BB. Attitude Towords teaching professionAnd job satisfaction of college teachers ofAssamAnd Orissa, The progress in Education. 2001; 70(2):257-258.
12. Sridevi KV. Job satisfaction of teacher educators of University of Mysore. Edusearch. 2011; 2(1):59-65.